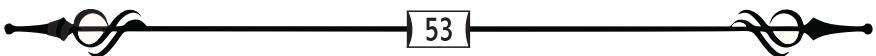




अन्त सुधार



॥ श्री हरि: ॥

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि, नैनं दहति पावकः ।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो, न शोषयति मारुतः।

आत्मा अजर अमर अविनाशी है । जीव का नाश नहीं होता है । शरीर का चोला बदलता रहता है । अतः हमें निष्काम होकर जीव की मुक्ति के लिए सतत कर्म करते रहना चाहिए । कहा गया है - अंत भला तो सब भला। बड़े-बड़े ऋषिमुनि यह आकांक्षा करते हैं कि जब उनका देहावसान हो तो गंगा का टट हो, मुख में तुलसी दल हो, ध्यान परमपिता के चरणारविन्द में रहे । मरणासन्न अवस्था में व्यक्ति जैसा चिन्तन करता है उसी के अनुरूप जीव की गति होती है ।

अन्तः-

व्यक्ति की मृत्यु के समय एवं मृत्यु के उपरान्त जीव के कल्याण हेतु पितरों के निमित्त कौन-कौन से कर्म करने चाहिए, किस विधि से करने चाहिए ताकि जीव का कल्याण हो, उसे मोक्ष मिले तथा पितरों का आशीर्वाद भावी पीढ़ी पर बना रहे, घर फलता-फूलता रहे, वंश-वृद्धि होती रहे।

हिन्दू शास्त्रों के प्रमुख संस्कारों में मृत्यु संस्कार अंतिम है किन्तु अति महत्वपूर्ण है । देह और आत्मा की सद्गति के लिए विधान पूर्व इस संस्कार को सम्पन्न करना चाहिए ।

इस संस्कार में मुख्यतः -

पवित्र अग्नि द्वारा दाहकिया से लेकर द्वादशा तक के कर्म सम्पन्न करवाये जाते हैं ।

मृत्यु के समय क्या करें ?

मृत्यु के समय सबसे बड़ी सेवा है, किसी भी उपाय से मरणासन्न रोगी का मन संसार से हटाकर भगवान् में लगा देना ।

इसके लिए

- उसके पास बैठकर घर की, संसार की, कारोबार की, किन्हीं में राग या द्वेष हों तो उसकी, ममता के पदार्थों की तथा अपने दुःख की चर्चा बिल्कुल

ही न करें।

- जब तक चेतना रहे भगवान् के स्वरूप की, लीला की तथा उनके तत्व की बात सुनावें। श्रीमद्भगवद्गीता के सातवें, नवें, बारहवें, चौदहवें, पन्द्रह अध्याय का विशेष रूप से अर्थ सुनावें। भागवत के एकादश स्कन्ध, योवसिष्ठ का वैराग्य प्रकरण, उपनिषदों के चुने हुए स्थलों का अर्थ सुनावें। जगत् के प्राणी-पदार्थ की, रागद्वेष उत्पन्न करने वाली बात, ममता-मोह को जगाने तथा बढ़ाने वाली चर्चा बिल्कुल ही भूलकर भी न करें।
- रोगी भगवान के साकार रूप का प्रेमी हो तो उसको अपने इष्ट-भगवान विष्णु, राम, कृष्ण, शिव, दुर्गा, गणेश किसी भी भगवद रूप का मनोहर चित्र सतत दिखाते रहे। निराकार-निर्गुण का उपासक हो तो उसे आत्मा या ब्रह्म के सच्चिदानन्द अद्वेत तत्व की चर्चा सुनावें।
- उस स्थान को पवित्र धूप, धुएँ, कर्पूर से सुगन्धित रखें, कर्पूर या घृत के दीपक की शीतल परमोज्जल ज्योति उसे दिखावें।
- समर्थ हो और रूचि हो तो उसके द्वारा उसके इष्ट भगवत्स्वरूप की मूर्ति पूजन करवावें।
- रोगी की क्षमता के अनुसार गंगाजल का अधिक या कम पान करावें। उसमें तुलसी के पत्ते अलग पीसकर छानकर मिला दें या तुलसी मिश्रित गंगाजल पिलाते रहें।
- गले में रूचि के अनुसार तुलसी या रूद्राक्ष की माला पहना दें। मस्तक पर रूचि के अनुसार त्रिपुण्ड या उर्ध्वपुण्ड तिलक पवित्र चन्दन से, गोपीचन्दन आदि से कर दें।
- रोगी के निकट रामरक्षा या महा मृत्युंजयस्त्रोत का पाठ करें। एकदम अन्तिम समय पवित्र नारायण नाम की विपुल ध्वनि करें।
- मृत्यु के समय तथा मृत्यु के बाद भी नारायण नाम की या अपने इष्ट भगवान्नाम की तुमुल ध्वनि करें। जब तक उसकी अर्थी चली न जाये, तबतक यथाशक्य कोई घरवाले रोवें नहीं।

अष्टमादान

अगर हो सके तो अंत समय पर अष्टमा दान करना चाहिए।

सामग्री -

१. काला कपड़ा(१ मीटर), २. खड़ाऊ, ३. सोने की टिकड़ी, ४. चाँदी की टिकड़ी, ५. लोहे की कड़ाही, ६. रुई, ७. काला तिल, ८. काला उड्ड, ९. गुड़, १०. नमक, ११. धी, १२. सरसों तेल आधा लीटर, १३. सप्तधान (चना दाल, चावल, गेहूं, उरद दाल, अरहर, मोठ दाल) तथा गाय यथा शक्ति ।

अंत समय की तैयारी

तीर्थों का जल, मथुरा जी की डोरी जमुना जल से धो के, भगवान का वस्त्र, गीता जी की पुस्तक, गोपी चन्दन, ब्रजरज, रुई, माचीस, तुलसी जी की शांख, गोबर की गोयठी, काला तिल, जौ, सोना, चाँदी, मूंगा, मोती (पंचरत्न), ओढ़ाने का रेशमी मुगाटा (राम नाम की चदर) ।

अंत समय का सीधा

पीतल की थाली या परात, कटोरी, १ किलो गेहूं या आटा, धी, गुड़ की डली । प्राणी का हाथ लगाकर चौरस्ते पर रखा देते हैं या शिव मन्दिर में रख कर आ जाते हैं ।

अंत समय का स्नान

जब देखते हैं कि प्राणी ऊपर का सांस लेने लगा हैं और पल्स देखते-देखते पता चलता है कि अब प्राणी कुछ ही मिनट का है, तब थोड़ा सा गर्म पानी करके प्राणी को नहला देना चाहिए और नया कपड़ा पहना कर गोपी चन्दन लगाकर तुलसी माला पहना दें । तीर्थों का जल बार-बार देते रहे । दही-मिश्री चटा दें । विस्तर से नीचे ले लें । गीता जी का पाठ सुनावे कीर्तन करें । अगर औरत है तो चोटी खोल देते हैं । कमर की डोरी एवं सभी प्रकार के गांठ खोल देते हैं (यानि बंधन खोल देते हैं) । इसे जीवन्त स्नान कहते हैं । अंतिम अवस्था आने के पूर्व स्वर्गीय होने वाले का सिर उनके लड़के या पोते के घुटने पर रखना चाहिए ।

मरणोपरान्त

मृत्यु के बाद व्यक्ति को स्नान कराया जाता है तथा जल में गंगाजल मिलाया जाता है। साथ ही समस्त तीर्थों का आह्वान भी करना चाहिए। स्नान परिवार के सदस्यों को करवाना चाहिए। स्नान के बाद अगर जनेऊ नहीं हो तो जनेऊ धारण करवाते हैं तथा नीचे का वस्त्र पहनाया जाता है। गोपीचंदन का तिलक लगाया जाता है, अगर संभव हो तो द्वादश तिलक लगाना चाहिए। उसके पश्चात पुष्प माला से अंलकृत करना चाहिए। घर की बहु या बेटा या घर का कोई सदस्य नीचे गोबर का चौका लम्बाई में लगाते हैं। उसपर ब्रजरज, छिड़क कर मृतक का सिर दक्षिण की तरफ करके पसार देते हैं। सिर की तरफ तुलसी का बिडला रख कर अगरबत्ती जला देते हैं। मृतक के पास कीर्तन करना चाहिए सांसारिक बातें नहीं करनी चाहिए।

मृतक का सिर दक्षिण की तरफ रहता है। मृत्यु शैया के ऊपर सूखा घाँस बिछाना चाहिए, घाँस के उपर बिछाने के लिए ढाई मीटर वस्त्र मंगाना चाहिए, पुरुषों के लिए सफेद वस्त्र व स्त्रियों के लिए लाल वस्त्र होना चाहिए, बांसों को बान्धने व फिर शव को बान्धने के लिए नारियल डोरी होनी चाहिए, थोड़ा कच्चा सूत होना जरूरी हैं। मृतक को दुशाला ओढ़ाते हैं व राम नाम की चढ़र भी ओढ़ाते हैं। स्नानोपरान्त वस्त्र कोरे पहनाने चाहिए, किसी भी उम्र की स्त्री होवे, उसमें तांबे का सिक्का रखकर एक स्त्री के योनिद्वार पर रखें, स्त्री से सन्तान उत्पन्न होती है इसीलिए उसकी योनि खाली नहीं रहनी चाहिए जिससे शव दाह के समय आवाज नहीं होगी। एक-एक दोनों कांख में एवं एक-एक दोनों जंधा पर रखा जाता है। फिर कपड़े पहनाने चाहिए।

सुहागन स्त्री के लिए सुहागन स्त्री को चुन्दड़ी की साड़ी पहनाकर, माथा ढकै, बाल बनाकर रिबन डालें (या मोली) लेकिन गाँठ नहीं लगावें, नथ, मंगलसूत्र, चुड़ी, बिंदिया आदि गहने पहनाएं। लेकिन चिता पर रखने से पहले गहने खोल लेवें, पहले नहीं खोलें, गहनों के साथ दाह संस्कार नहीं करें। मुँह में सोना की तुष, एक आँख में मूँगा, एक आँख में मोती रखें, देवी के

चढ़ी कुमकुम से बिन्दी लगावें हथेलियों पराथलियों मे कुमकुम की मेहन्दी लगावे, मेहन्दी अशुद्ध मानी गई है इसके प्रयोग से सदगति नहीं होती है अतः इसका प्रयोग न करें। गले में मोती बाँधे, हाथ में मोली बाँधे, लेकिन किसी चीज में गांठ न लगावे, तुलसी की माला पहनावे इस प्रकार श्रृंगार करके पति से मांग भरावे, स्नान कराने के बाद अपने परिवार की स्त्रियों के सिवाय दूसरी स्त्रियों की दृष्टि से बचावे।

विधवा स्त्री के लिए

इस कार्य में वो पहनती है वैसे कपड़े पहनावें राम नाम की चढ़र व दुशाला ओढ़ावें, बाकी कार्य स्त्रियों के जैसे ही होते हैं।

स्त्री को पहले ससुराल की साड़ी उसके बाद पीहर की साड़ी और तब बेटा पोता के ससुराल की साड़ी या दुशाला ओढ़ाने का रिवाज है।

पुरुष को पहले घर के वस्त्र उढ़ाने के बाद राम नाम की चढ़दर ओढ़ाइ जाती है तब बेटा पोता के ससुराल की दुशाला ओढ़ाने की रिवाज है।

इसके बाद अन्त्येष्टि संस्कार करने वाला दीक्षण दिशा की तरफ मुख करके बैठे। पवित्री (कुशा की अंगुठी) धारण करें हाथ में जौ चावल, पुष्प, जल, कुशा लेकर संस्कार का संकल्प करें। कियाकर्म कराने का ज्येष्ठ पुत्र को ही अधिकार है, उनकी अनुपस्थित में उस वक्त जैसा योग बने वैसा करें।

पिण्डदान

सर्व प्रथम पिण्ड देने से पहले शवस्थान पर, पिण्ड को भूमि के उपर कुशा पर रखें। मृतक के घर के सदस्य जो मृतक से छोटे हैं हाथ में नारियल लेकर चार परिकमा करें।

प्रथम पिण्ड:- घर के अन्दर शव संस्कार करके संकल्प के बाद दिया जाए, यह पिण्ड मृतक के पेड़ (कटि प्रदेश) पर रखा जाए।

दूसरा पिण्ड:- मृतक शैया पर शव स्थापना के बाद दिया जाए, यह पिण्ड मृतक के पेट पर रखा जाय इस पिण्ड से वास्तु देवता को प्रसन्नता होती है।

तीसरा पिण्ड:- इस पिण्ड को पेट और वक्ष की सन्धि पर रखा जाए, इस

पिण्ड को देने से भूतादिक गगनचारी देवतागण प्रसन्न होते हैं, यह पिण्ड जहाँ पर चार रास्ते मिलते हो ऐसे चोराहे स्थल पर रख दिया जाए।

चोथा पिण्डः- शमशान पर शव रखकर छाती पर अर्पित करे, इस पिण्ड को देने से दसों दिशाओं को सन्तुष्टि होती है।

पांचवा पिण्डः- चितारोहण के बाद इस पिण्ड को सिर पर रखा जाए। कोरे वस्त्र पहने, जूते नहीं पहने, औरत की सुहाग की चीजें मृतक के सिर के नीचे रखें।

शवयात्रा

परिवारजनों के परिक्षमा करने के बाद घर की एक महिला तेल का दीपक हाथ मे लेकर बाहर बायीं तरफ खड़ी रहें। जिस समय पुरुष मृतक शैया को उठाकर भगवान् का नाम लेते हुए शमशान के लिए प्रस्थान करें। उस समय घर की बहुएं पल्ले से पंथ बुहारती हैं।

सबसे पहले चरण तरफ से शव को बाहर करें मध्य के पिण्ड के बाद सिर आगे रहता है। शव के दोनों हाथ तथा दोनों पैर बाँध देना चाहिए तथा शव को अकेला नहीं छोड़ना चाहिए। शव के पास श्री भगवान् का नाम रटते रहना चाहिए जिससे भूत-बेतालादि शव पर कब्जा करने की चेष्टा न करें।

कुछ लोकाचार में यदि मृतक के प्रपौत्र हो चुका है तो पहले शव उठाने में उसके हाथ, फिर पौत्र हो चुका हो तो उसके हाथ लगावें। इसके बाद पुत्रगण, छोटे भाई परिवारी जन शव उठायें।

दौहित्र का कंधा लगाना भी लोकाचार में बहुत महत्व रखता है।

शव को ले जाने के बाद मृतक के जो कपड़े पहने हुए थे वो घर की बहुएं घर के बाहर बाईं तरफ रख देवें। आंगन घर की बहुएं धोएं, सबसे पहले मृतक की पत्नि हो तो पत्नि अन्यथा घर की बड़ी बहु स्नान करे, बाद में सभी स्नान करें।

अग्नि संस्कार

घर से निकलते वक्त पैर आगे रहते हैं तथा विश्राम के बाद सिर आगे रखकर ले जाते हैं। शमशान घाट पर जहां अग्नि संस्कार करना हो वहां पानी से धोकर स्थान साफ करना चाहिए। उसके बाद गोबर से लीपकर जौ, तिल विखेरकर कुशा को रखकर फिर लकड़ी जमाते हैं। बाद में मृतक शरीर को चिता पर लिटाते हैं। मृतक के पैर उत्तर तरफ तथा सिर दक्षिण की तरफ रखा जाता है। मृतक के शरीर के आभूषण तथा ऊपर के वस्त्र निकाल लेना चाहिए। उसके बाद मृतक शरीर पर धी लगा दिया जाता है। साथ में तुलसी की सुखी लकड़ी, चंदन का चूरा, चंदन का मुठिया, अगरबत्ती एवं कपूर चिता पर रखा जाता है। धी देने के बाद कपूर को दोनों आंखों पर तथा मुंह आदि पर रखते हैं। तुलसी की लकड़ी कमर के ऊपर ही रखना चाहिए। बचे हुए दो पिण्ड वायु नाम यम के लिए दिये जाते हैं। पिण्ड को हमेशा अंगूठे की ओर से छोड़ना चाहिए। यह देकर फिर मुखाग्नि दी जाती है है इसके बाद कपाल किया करते हैं। कपाल किया के बाद पंच लकड़ी दी जाती है आजकल कंडे के टुकड़े कर वो पंच लकड़ी की जगह देते हैं। इसके बाद मुखाग्नि देने वाला तथा साथ में जाने वाले दागिये भी स्नान करते हैं। परन्तु वर्तमान में सिर्फ मुखाग्नि देने वाला ही स्नान करता है तथा स्नान के बाद तिलांजलि देते हैं। मुखाग्नि देने के पहले मुखाग्नि देने वाला उसका सम्बोधन कर दहाड़कर (जोर से) आवाज देता है। जिस लोटे में अग्नि लाते हैं उसे मांजकर उसमें जल भरा जाता है तथा आगे जाकर कार बांधी जाती है। घर पहुंचने पर मृतक को संबोधन कर आवाज देते हैं। उसके बाद सब दागिये रवाना हो जाते हैं।

अर्थी जाने के बाद पूरे घर को धुलवाना चाहिए। उस दिन घर का अन्न नहीं खाते हैं बेटों या पोतों के ससुराल से खिचड़ी ले के आते हैं, उससे सामान मँगवाकर खिचड़ी व बड़ी का साग बनता है उसे कड़वा ग्रास कहते हैं। वही सगे घरवालों को थाली पर बिठाते हैं। भोजन के पूर्व नित्य गऊग्रास निकालना चाहिए।

शाम के समय जहाँ पर शव रखा गया था, वहाँ पर बालू या आटा विछाकर ऊपर से ढक देते हैं शाम को उसके उपर तेल का दीपक जलाकर फिर से ढक देते हैं दूसरे दिन सुबह ढक्कन उठाकर देखते हैं। उस मट्टी पर जैसा चित्र अंकित होता है कहते हैं मनुष्य उसी योनि में जायेगा ऐसा लोकाचार है। उस मट्टी को फैंक देते हैं। दस दिन तक रोज रात को तेल का दीपक जहाँ आटा या बालू रखा गया था वहाँ तथा एक घर के आगे जलाते हैं। मृतक को ले जाने के बाद आंगन धुलने के बाद जो सतरन्जी विछाते हैं वो ग्यारहवें दिन ही उठती है। पहले नहीं उठती है। बेटे-बहुएं वहीं सतरन्जी पर विस्तर डालकर सोते हैं, बारह दिन ब्रह्माचर्य का सभी पालन करें। किया कर्म करने वाला पुत्र एक समय अन्न खाता है व नियम पूर्वक रहता है। लेकिन उसको भूखा नहीं रखना चाहिए। फलाहार देते रहना चाहिए। कारज करने वाले को बिल्कुल शुद्ध संत की तरह रहना चाहिए। अपना अलग आसन विछाकर बैठना चाहिए। उसके खाने के बर्तन भी अलग रखते हैं।

गरुड पुराण तीये के दिन शुरू होती है।

नोट- अगर शनि, अमावश्या तीसरा दिन ही आ जाती है तो चौथे दिन से तिये का काम शुरू करते हैं।

तीये (तीसरा) कि रसोई

तीसरे दिन मिठाई, पूरी-साग बनाते हैं। बाद में नौ दिन तक नित नई रसोई बनाते हैं। तिये से ही घर के बाहर एक अभ्यागत (भिखारी) जिसे तारकिया भी कहते हैं, को खाना खिलाते हैं। दसवें दिन उसको एक जोड़ी कपड़ा, रुपया, बर्तन देकर उसको विदा दे देते हैं।

तीसरे दिन से ही गाय की पत्तल दस दिनों तक बराबर निकालते हैं।

तीये की सामग्री -

गोपी चन्दन, भोज पत्र, कच्चा सुत, सफेद ऊन, सफेद वस्त्र आधा मी., तिल १०० ग्राम, जो ५० ग्राम, सुपारी ५, पेड़ा १०० ग्राम, फल ५ पीस, जोका आटा २.५ केजी, भोटा की छोटी कांटी १५ पीस, थैली पिली यालाल साटन की १, पिली सरसौं, मृग छाला टुकड़ा, सोने का तुस, अगरबत्ती, रुई, सलाई, मिट्टी का दिया १०० पीस, कलश २ पीस, कुण्डा २ पीस, कुशा आसन २ पीस, कुशा, दुध

कधा १ पांव, दही थोड़ा, शहद, धी ५० ग्राम, चिनी, गोबर, गंगाजल, पत्तल ५ पिस, दोना ५ पीस, खुदरा पैसा, थाली, भोटा, बाल्टी, कुदाली, चिमटा, भाडु बाँस का

तीसरे दिन मृतक की पत्नी हो तो, पहले पत्नी अन्यथा घर की बड़ी बहू पहले सिर धोकर स्नान करती हैं। बाद में अन्य ग्राम बहुएं व पारिवारिक औरतें स्नान करती हैं। अन्जली देने का तरीका - पानी में तिल व जौ डालकर डाब को अंगूठे में पिरोकर धोंबे भर भर कर सात-सात अन्जलियाँ देते हैं। यही प्रक्रिया ग्यारहवें दिन भी करते हैं।

जहाँ पर अन्तिम संस्कार होता हैं वहाँ पर किया कम करने वाला बेटा पानी से सिंचने जाता है। वहाँ से अस्थियां लेकर आते हैं। भस्मी को पास ही की नदी या तालाब में ले जाते हैं। अस्थियां घर पर लाकर लाल कपड़े की कोथली में डालकर घर के बाहर के भाग में टांग देते हैं। जिस दिन हरिद्वार जाते हैं, बेटा गले में अस्थियां पहनता है। एक पेड़ के नीचे पूजा होती है। फिर जो बेटा-बहू हरिद्वार जाते हैं वो अस्थियाँ लेकर हरिद्वार के लिए रवाना हो जाते हैं बाकी सभी घर आ जाते हैं।

दसवें दिन उड्ड के आटे का पिण्ड लगता है।

ग्यारहवें दिन का कार्य

ग्यारहवें दिन घर की शुद्धि होती है। परा घर धोया जाता है। सिर धोकर नहाने की प्रक्रिया तीसरे दिन जैसी ही होती है। यानि सूतक निकालते हैं। पूरे घर को चौका, बर्तन सभी छूत के सारे समान शुद्ध करना चाहिए। छूत के सारे समान कंगाली या भिखारी को देते हैं। सुबह से चूल्हा नहीं चलता है।

ग्यारहवें दिन घाट की पूजा में खाट, पुराना बिस्तर तकिया चढ़र, पुराने बर्तन, कपड़ा घर से जाता है बाकि सभी बाजार से खरीदते हैं। जब घाट पर ग्यारहवें दिन पूजा होकर शान्ति की छींटा आता है। तब पूरे घर में छींटा दे कर शुद्ध करते हैं। शोक सूचक चददर या पोतिया सभी गले से उतार कर घाट पर ही छोड़ कर आते हैं। किया का छींटा आने के बाद रसोई बनाई जाती हैं। उसके बाद चूल्हा जलता है। उस दिन साग, कढाई की पूँड़ी और बुंदिया-भुजिया बनता है।

नारायण बलि का कार्य ग्यारहवें दिन किया जाता है। नारायण बलि से पहले क्रिया कर्म करने वाले व्यक्तिका सर्वप्रथम मुँडन होता है, मूँछ, दाढ़ी व काँख के बाल हटाए जाते हैं। हाथ व पैर के नाखुन काटे जाते हैं। बाकी सभी भाई बन्धु मुँडन नहीं करवाते। लेकिन मूँछ, दाढ़ी, काँख के बाल हटाते हैं। नाखुन भी काटते हैं।

नारायण बलि का सामान

रोली, मोली, पान-३१, सुपारी-६०, लौग-६०, इलाइची-६०, सफेद-पीला फूल, दूर्वा, अविर, पीली सरसो १०० ग्राम, सर्वोषधि, पञ्चरत्न, सरतमृतिका, अगरबत्ती, रुई, माचिस, सरसो का तेल १/२ लिटर, गंगा जल, कुशा, जनेऊ १ मुठा, गोटा उड़द १०० ग्राम, पापड़ २ पीस, गोपी चन्दन २ पीस, कच्चा दुध २ किलो, धृत १ किलो, शहद १ शीशी, चिनी १/२ किलो, गोबर, गोमुत्र, कर्पुर १ डीब्बा, नारियलगट-७, आम की डाली-७, चावल ५ किलो, गेहू-१० किलो, दही १ किलो, फल ४ दर्जन(केला, सेब इत्यादी), पेड़ा १ किलो, गोटा मुँग १०० ग्राम, तुलसी पत्ता, लाल कपड़ा १ मीटर, सफेद कपड़ा १ मीटर, पीला कपड़ा आधा मीटर, हरा कपड़ा आधा मीटर, काला कपड़ा आधा मीटर, पीला रेशमी कपड़ा १ मीटर, तिल १ किलो ५०० ग्राम, जौ आधा किलो, पत्तल १ बण्डल, दोना ५० पीस, मिट्टी का दिया ७५ पीस, मिट्टी का नदिया २ पीस, मिट्टी का छोटा कलश ६ पीस, ताम्बा का लोटा छोटा (ढक्कन सहित) १ पीस, लोहाका कड़ाही छोटी १ पीस, पीतल का टोपिया १ पीस, चम्मच १ पीस, कच्चा सूत, ऊन सफेद ५० ग्राम, जौ का आटा २ किलो ५०० ग्राम, सिन्दुर, हवन करने व खिरान्न बनाने वास्ते सूखी लकड़ी १० किलो, नवग्रह समीधा, स्वर्ण बिष्णु प्रतिमा १, ताम्बा का शंकर प्रतिमा १, चांदी का ब्रह्म प्रतिमा १, लोटा यम १, शीशा प्रेत १, स्वर्ण की टीकड़ी २, चांदी की टीकड़ी ५, भोजपत्र, शुद्ध बालू, पंचपात्र १ सेट, आसन ६ पीस।

महापात्र को देने के लिए सीधा का सामान-

मिर्च, हल्दी, नमक, जीरा, तेल, आलु ५ किलो, दाल इत्यादी श्रद्धा अनुसार।

महापात्र भोजन (५ ब्राह्मण)

पुड़ी, सब्जी, जलेबी, दही इत्यादी।

महापात्र को देने वास्ते

भुक्त बस्त्र, धोती, दरी, मच्छरदानी, बेडसीट, तकिया, चादर, छाता, चप्पल,

वर्तन, सोडिया, रजाई इत्यादी यथा शक्ति

बारहवें दिन का कार्य

सुबह घर पर द्वादशा सपिण्डी श्राद्ध होता है। इस श्राद्ध में घर के छोटे एकादशी व्रत एवं दान का संकल्प लेते हैं।

द्वादशा में बारह घडे भरे जाते हैं, अगर पुरुषोत्तम मास हो तो एक घडा अधिक भरा जाता है। यह पीतल का कलश या मिट्टी का घडा होता है।

द्वादशा में कुल पन्द्रह पद चढ़ते हैं, तेरह सपिण्डी श्राद्ध में एक शैया दान में, एक गरुड़ पुराण पर।

सपिण्डी श्राद्ध में तेरह ब्राह्मण को पद दिया जाता है।

पद का सामान (पुरुष)-

वस्त्र (धोती कुर्ता), स्वर्ण, चांदी का गोलीया, गोमुखी, गीता, माला, कुषा का आसन, छाता, कपड़े का जूता (चप्पल), जनेउ, पीतल की थाली (या कोई वर्तन), फल, पंच पात्र, चम्मच एवं रूपैया।

पद का सामान (स्त्री)-

वस्त्र (साड़ी, ब्लाउज), सिन्दूर, काजल, स्वर्ण, चांदी, कांच, तेल, कंधा, टिक्की, चप्पल, छाता, पीतल की थाली (या कोई वर्तन), फल एवं रूपैया। यह पूजा एवं हवन तुरन्त उठती है।

सपिण्डी श्राद्ध के बाद अपने गुरुको शैया दान या सुख शैया का कार्य किया जाता है। अगर गुरु ना मिले तो कोई भी ब्राह्मण को शैया दान दिया जाता है।

शैया दान का सामान-

पाँच वरतन, सभी प्रकार के अन्न, धी, तेल, मसाले, चीनी, गुड़, टोर्च, साबुन, पेस्ट, तेल, लालटेन, माचिस, पलंग, रजाई, बिस्तर, तकिया, मच्छर दानी, चद्दर, ओढ़ने की चद्दर, छाता, जूता, चांदी का प्याला, सोने की भगवान की मूर्ती, सोना-चांदी यथाशक्ति आभुषण, गुरु गुरियाणी के कपड़े आदि दिये जाते हैं। लालटेन या इमरजेन्सी लाइट जला कर दें। गुरुजी को पलंग पर बिठा कर मुँह में लड्डू एवं हाथ मे रूपैया देते हैं, फिर उन्हें सुलाते हैं। बेटा सिर की तरफ, बहुए पांव की तरफ से पलंग पकड़कर गुरुजी को झुलाते हैं? पूछते हैं गुरुजी सोरा की दोरा। गुरुजी कहते हैं घणा ही सोरा। वो सारा सामान

गुरुजी को देते हैं।

गौदान

गौदान में गाय बाढ़ी की माँ हो तो अति उत्तम। गाय बाढ़ी की रस्सी गौदान करने वालेको स्वयं देना चाहिए।

गौदान देते समय गोबर या मिट्टी से बेतरनी बनाकर पंडीत जी द्वारा पूजा होती है। गाय की पूँछ से सब छींटा लेते हैं एवम् गाय के कान मे एकादशी व दान धरम बोलते हैं।

गौदान का सामान-

गाय की साड़ी (जरी वाली), बाढ़ी को ब्लाउज, सोना का सींग, चांदी का खुर, तांबा की पीठ, मोती की पूँछ, दाना देने के लिए धामा, बाल्टी, घण्टी, चारा, फूल की माला, दूध दुहने के लिए बाल्टी, गिलास, टोपिया, बड़ा चम्मच, दान में दिया जाता है।

ब्राह्मण भोजन

गौदान के पश्चात् ब्रात्पाण व परिवार तथा समाज का भोजन होता है। ब्राह्मण भोजन के लिए ब्राह्मणों को निमन्त्रण अपनी श्रद्धा अनुसार दें। भोजन पश्चात् दक्षिणा दें कर विदा करें।

शाम को गरुड़ पुराण उठाने एवं पगड़ी का दस्तुर होता है।

गरुड़ पुराण की पूजा

ब्राह्मण भोजन के पश्चात् गरुड़ पुराण उठाने का कार्य होता है। जिसमे पंडित द्वारा गरुण पुराणका अन्तिम अध्याय पढ़कर सुनाया जाता है। गरुड़ पुराण वाचक की पूजा की जाती है एवं गरुड़ पुराण पर एक पद व आभुषण चढ़ाया जाता है।

मृतक की पत्नी के पीहर से कपडे आते हैं और चूड़ी आती हैं, वो मृतक की पत्नी पहनती हैं, बाद में गंगा जी जाने के बाद यह कपडे गंगाजी में डाल देते हैं। बाद में दूसरे कपडे पहनने शुरू करते हैं। सभी बेटा पोता के ससुराल से ज़ंवाई बेटी को कपडे व टोपी या तौलीया दिया जाता है एवं तिलक लगाया जाता है। बाद में आँखे खोलाई होती है। नेवगण या कामवाली लोटे में पानी व हरी डाली लेकर रखती है। घर की औरतें व समधनें तथा अन्य औरतें बाएं हाथ से आँखे धोती हैं, व रूपये देती हैं। सभी मन्दिर जाते हैं।

बहन भाई की आरती करती है। तत्पश्तात् नजदीक के मन्दिर में चावल दाल

का सीधा एवं धनिया पोदीना तथा फल भेजा जाता है फिर उसी मन्दिर में जाकर गरुड़ पुराण समर्पण की जाती है। पंडित जी हरी सामग्री घरवालों को देते हैं।

गरुड़ पुराण के पश्चात् गुड़ लापसी, बड़ी की सब्जी, फुल्का से मुंह जुटाते हैं। घर आने के बाद बेटे माँ से मिलते हैं, बहनें भाइयों को खाना खिलाती हैं। उस दिन सभी बेटे बहुएँ अपने अपने शयन कक्ष में सोते हैं।

क्रिया कर्म करने वाला, गरुड़ पुराण समर्पण करने के बाद सभी को प्रणाम करता है, व सब बड़े उसे शगुन का रूपैया देते हैं।

कोई तेरहवें या चौदहवें दिन गंगा प्रसादी करके गंगाजली खोलते हैं। बहन-बेटियों को सीख देकर एक बार बिदाकर देते हैं। साढ़े पाँच महीनों के अन्दर-अन्दर कभी भी छः माही कर सकते हैं व साढ़े ग्यारह महीनों के अन्दर-अन्दर कभी भी बारा मासी कर सकते हैं।

भोजन जीमाना

पखी का घड़ा का काम होने के बाद, उसी दिन से ब्राह्मण या ब्राह्मणी जीमते हैं। वह दोनों समय नाश्ता खाना सभी करते हैं। साढ़े पाँच महीना तक खाने के बाद भोजन की सीख निकालते हैं। यदि ब्राह्मण को जीमने आने में असुविधा होती है तो सवा महीना जिमाकर बाकी के साढ़े पाँच महीने के हिसाब का धान चून अन्न उनके घर में भेज देते हैं।

जीमने वाले का पांचों कपड़ा, चप्पल या जूता, कछु गहना, चांदी के बर्तन देते हैं। कपड़े पहनाकर टीका निकालकर विदा करते हैं।

पितर भेला

बारह महीने के सारे काम पूरे होने के बाद पितर भेला का काम पंडित द्वारा होता है। एक श्राद्ध निकलने के बाद पित्रभेला होने के बाद प्राणी का श्राद्ध होना शुरू होता है। उसके बाद ही कागोल और गौग्रास निकलता है। प्रथम श्राद्ध में दूध व शक्कर का दान देते हैं। बाद में श्राद्ध होना शुरू होता है। ऐसे तो पिता अपनी बेटी के घर का कभी नहीं खाता है। लेकिन मरने के बाद अगर बेटी, जवाई व दोहिता हो तो बेटी अपने पिता का आसोज सुदी एकम के दिन, नान श्राद्ध करती है।

साल भर तक करने वाले कर्म

१. बारह महीने तक प्राणी के निमित्त दान धर्म करते रहना चाहिए।
२. भागवत यदि प्राणी के नहीं सुना हुआ है। तो उसके निमित्त भागवत पाठ करवाना चाहिए।
३. गीता जी का पाठ ब्राह्मण द्वारा करवाना चाहिए।
४. साढ़े ग्यारह महीने पर घड़ा भरा जाता है। ब्राह्मण और परिवार भोजन करता है।
५. मरने वाले के बारह दिन के अन्दर ही यदि परिवार का कोई गुजर जाता है तो पहले सारे काम उसके होते हैं। पहले मरने वाले के बाद में।
६. मरने वाले की जब पहली तिथि आती है। तब घर की बहन बेटी को भोजन पर बुलाते हैं।
७. औरत के मरने पर उसके पीहर की भी रस्म होती है। गरुड़ पुराण पर साड़ी, धर्म पूण्य के रूपैये चढ़ाते हैं।

विशेष निवेदन -

प्रायः यह देखा गया है कि मृतक के रिश्तेदारों द्वारा मृत्यु होने पर शाल अथवा साड़ी लाते हैं। कहीं-कहीं तो इसकी संख्या दस से बीस हो जाती है। आज के युग में इतने महंगे वस्त्र लाकर शव पर रखते हैं, यह वस्त्र मात्र एक घटे भी नहीं रहते और शमशान पर जाते ही कोना फाड़कर फेंक देते हैं। इसका कोई औचित्य नहीं है। शव पर मात्र एक ही वस्त्र रखना चाहिए। अन्य रिश्तेदार वस्त्र न लावें और अगर ले भी आवे तो शव पर नहीं रखें। उस वस्त्र को घर पर ही एक ही स्थान पर रख देवें और बाद में किसी गरीब परिवार को बुलाकर देवें। ताकि वह उसका उपयोग कर आपको दुआ दे। इससे मरने वाले की आत्मा को भी शांति मिलेगी। जहां तक हो सके नया वस्त्र बाजार से लावें ही नहीं, बल्कि उतनी राशि उस परिवार को दे देवें। एकत्रित राशि से गाय का चारा, ब्राह्माणों को वस्त्र या किसी विद्यालय को यह राशि दी जावे जो वास्तविक धर्म होगा।

सुआ-सूतक -

भारतीय संस्कृति एवं सनातन धर्म में आचार-विचार को सर्वोपरि महत्व प्रदान किया गया है। मनुष्य के जीवन में कुछ अवस्थाएं ऐसी भी होती हैं, जब

व्यक्ति आशौचावस्था में अर्थात् सुआ-सूतक में रहता है। सुआ-अपने परिवार में नवशिशु के जन्म होने पर वह परिवार निकटतम गौत्री बंधुओं को सुआ लग जाता है। जो दस दिन का माना जाता है। इन दिनों में घर में भगवान की पूजा, मंदिर में देवदर्शन, पित्र कार्य आदि शुभ कार्यों का निषेध किया गया है। यहां तक कि देव मंदिर में प्रवेश तथा पूजन आदि करना भी वर्जित है, किन्तु प्रायः यह देखा गया है कि इस ओर ध्यान नहीं रखते हुए मंदिर परिसर में जाकर परिक्रमा लगाई जाती है जो कि उचित नहीं है। मंदिर में दर्शनादि बाहर से ही किये जाते हैं।

सूतक -

परिवार में (सगौत्र) किसी भी व्यक्ति की मृत्यु/स्वर्गवास होने पर उपरोक्तनुसार देवार्चन पवित्र कार्य आदि शुभ कार्यों का निषेध किया गया है। द्वादशा तथा पगड़ी के कार्यक्रम सम्पन्न होने के बाद अर्थात् बारह रात्रि के उपरांत ही सूतक समाप्त होता है किन्तु देवदर्शन हेतु मंदिरों में जाने के लिए सोलह रात्रि का विधान है। इसके पश्चात् शुद्ध होते हैं। चौथी पीढ़ी में दस रात्रि तक, पांचवी पीढ़ी में छः रात्रि तक एवं छठवीं पीढ़ी में चार दिन तक सूतक माना गया है। शास्त्रानुसार जन्म सूतक (सुआ) और मरण सूतक हेतु नियम एक ही है, किन्तु जन्म सूतक में मंदिर परिसर में तो जा सकते हैं परन्तु मंदिर के अंदर प्रवेश निषेध है। जबकि मरण सूतक में तो पूर्ण रूप से ही मंदिर जाने का निषेध है।

सूतक में भगवान् या किसी बड़े को प्रणाम नहीं करना चाहिए, छोटो को आशीर्वाद भी नहीं देना चाहिए।

विशेष -

आज के युग में इस बात को नजर अंदाज किया जा रहा है जो कि उचित नहीं है वरन् अनिवार्य रूप से इसका पालन किया जाना चाहिए।